कार्यशाला आयोजन क्रम

दिनांक 28 नवंबर 2016 सोमवार

पंजीयन प्रातः –9:00 से 10:00

समारंभ प्रातः– 10:00 से 11:00

प्रथम सत्र

विषय	विषय
क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व	अनुसंधान एवं क्रियात्मक अनुसंधान
पूर्वाह्न 11:00 से 12:00	अपराह्न 12:00 से 1:30

मध्यावकाश – अपराह्न 1:30 से 2:00

द्वितीय सत्र

विषय	विषय
क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान उपयोगी उपकरण एवं प्रतिवेदन लेखन	कार्य समूह निर्माण एवं निर्देश
अपराह्न 2:00 से 3:30	अपराह्न 3:30 से 4:15

दिनांक 29 नवंबर 2016 मंगलवार

तृतीय सत्र

विषय

समूह कार्य

पूर्वाह्न 10:30 से 1:30

मध्यावकाश – अपराह्न 1:30 से 2:00

चतुर्थ सत्र

प्रतिवेदन प्रस्तुति	समाहार
अपराह्न 2:00 से 3:00	अपराह्न 3:00 से 4:00

आयोजन प्रभारी

संरक्षण –

श्री व्ही.के लड्डा

श्री ए.के मालू

श्री .एन.के लड्डा

डॉ.चित्रांगद उपाध्याय

श्री बी.के शर्मा

समन्वय एवं संचालन

डॉ सुरेखा जैन – प्राचार्य

डॉ रागिनी श्रीवास्तव

श्रीमती पूर्णिमा जोशी

श्रीमती शोभा श्रीवास्तव

डॉ मीनू खान

तकनीकी सहयोग

सुश्री श्वेता भार्गव

श्रीमान इमरान अहमद

श्रीमान पवन वैद्य

श्रीमती शिव रंजनी राठौर

अधिक जानकारी हेतु संपर्क सूत्र –

डॉ रागिनी श्रीवास्तव – 94253 32824

श्रीमती पूर्णिमा जोशी – 94248 14207

ACTION RESEARCH WORKSHOP

(INTER-COLLEGIATE)
LEVEL

ORGANISED BY

MAHARAJA COLLEGE, UJJAIN

MAHARAJA COLLEGE
NEAR ABHILASHA COLONY DEWAS ROAD UJJAIN
PH.0734–2520220,21
Emai—principal@maharajacollegeujjain.com

उज्जैन

अत्यंत प्राचीन काल से पवित्र नदी के रूप में विख्यात उत्तरवाहिनी शिप्रा के किनारे बसा हुआ शहर, भूतभावन भगवान महाकालेश्वर के ज्योर्तिलिंग, श्रीकृष्ण बलराम की विद्या स्थली सांदीपनी के आश्रम, कर्क रेखा के समीप बने खगोलअध्ययन के केन्द्र वेधशाला के लिए जाना जाता है। शिक्षा की दृष्टि से उज्जैन आज भी अपनी विशेष महत्ता रखता है।

महाराजा महाविद्यालय

सन् 2005 से संचालित विशाल परिसर में स्थापित उज्जैन संभाग का एक प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान है। राष्ट्रीय प्रत्यायन एवं मूल्यांकन परिषद (NAAC) द्वारा अधिमान्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से 2 (F) 12 (B) के लिये सम्बद्ध , विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से स्थायी सम्बद्धता प्राप्त तथा स्कूल ऑफ एक्सीलेंस(SOE) जैसे वैश्विक स्तर के विशिष्ट संस्थानों द्वारा सम्मानित यह महाविद्यालय आधुनिक तकनीक एंव व्यापक वैचारिक संपदा से सम्पन्न है।

क्रियात्मक अनुसंधान

शिक्षा सतत् विकसित होने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा को प्रतिफलित करने वाले विद्यालय, शिक्षण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियॉ इत्यादि में निरन्तर विकास की संभावनाएँ विद्यमान है। इन संभावनाओं को साकार करने के लिये क्रियात्मक अनुसंधान एक अत्यंत महत्वपूर्ण आन्दोलन के रूप में मुखरित हुआ है। विद्यालय की कार्यप्रणालियों में सुधार लाने के लिए विद्यालयीन समस्याओं की पड़ताल करना ही क्रियात्मक अनुसंधान है शिक्षक जब शिक्षा के महत् उद्देश्यों की पूर्ति के लिये विद्यालयीन कार्य और निर्णयों को परिष्कृत करने के लिये अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करते है यही क्रियात्मक अनुसंधान है। यह परंपरागत अनुसंधान से अलग और विद्यालय के लिये अधिक उपादेय है। विद्यालय की समस्या का समाधान करने के लिये शिक्षक स्वयं की भूमिका का निर्धारण करता है। इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान स्वनिर्देशन भी है। साथ ही यह स्वयं सीखने का एक प्रभावी तरीका है।

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य –

1. ज्ञान को बढ़ाना और परिमार्जित कर उपयोगी बनाना।

2. नवीन शैक्षिक ज्ञान की खोज कर विभिन्न शैक्षिक समस्याओं का निदान एवं उपचार ।